

पंचास्तिकाय
(आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी विरचित)
【मूल गाथा पाठ आ. जयसेन स्वामी के अनुसार】

इंद-सय-वंदियाणं तिहुवण-हिद-महुर-विसद-वक्काणं।
अंतातीद-गुणाणं णमो जिणाणं जिदभवाणं॥ 1 ॥

समण-मुहुग्गदमट्ठं चदुगदि-विणिवारणं सणिव्वाणं।
एसो पणमिय सिरसा समयमिणं सुणुह वोच्छामि॥ 2 ॥

समवाओ पंचण्हं समयमिणं जिणवरेहि पण्णत्तं।
सो चेव हवदि लोगो ततो अमओ अलोयक्खं॥ 3 ॥

जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मं तहेव आयासं।
अत्थित्तम्हि य णियदा अणण्णमइया अणुमहंता॥ 4 ॥

जेसिं अत्थि-सहाओ गुणेहिं सह पज्जयेहि विविहेहिं।
ते होंति अत्थिकाया णिप्पण्णं जेहि तेल्लोक्कं॥ 5 ॥

ते चेव अत्थिकाया तिक्कालिय-भाव-परिणदा णिच्चा।
गच्छंति दविय-भावं परियट्ठण-लिंग-संजुत्ता॥ 6 ॥

अण्णोण्णं पविसंता दिंता ओगासमण्णमण्णस्स।
मेलंता वि य णिच्चं सग-सब्भावं ण विजहंति॥ 7 ॥

सत्ता सव्व-पदत्था सविस्सरूवा अणंत-पज्जाया।
भंगुप्पाद-धुवत्ता सप्पडिवक्खा हवदि एक्का ॥ 8 ॥

दवियदि गच्छदि ताइं ताइं सब्भाव-पज्जयाइं जं।
दवियत्त भण्णंति हि अणण्णभूदं तु सत्तादो॥ 9 ॥

दव्वं सलक्खणीयं उप्पादव्वय-धुवत्त-संजुत्तं।
गुण-पज्जयासयं वा जं तं भण्णंति सव्वण्हू॥ 10 ॥

उप्पत्ती य विणासो दव्वस्स य णत्थि अत्थि सब्भावो।
वयमुप्पाद-धुवत्तं करेदि तस्सेव पज्जाया॥ 11 ॥

पज्जय-रहियं दव्वं दव्व-विमुत्ता य पज्जया णत्थि।
दोण्हं अणण्णभूदं भावं समणा परूवेति॥ 12 ॥

दव्वेण विणा ण गुणा गुणेहिं दव्वं विणा ण संभवदि।
अव्वदिरित्तो भावो दव्व-गुणाणं हवदि तम्हा॥ 13 ॥

सिय अत्थि णत्थि उहयं अव्वत्तव्वं पुणोवि तत्तिदयं।
दव्वं खु सत्तभंगं आदेस-वसेण संभवदि॥ 14 ॥

भावस्स णत्थि णासो णत्थि अभावस्स चेव उप्पादो।
गुण-पज्जएसु व भावा उप्पाद-वये पकुव्वंति॥ 15 ॥

भावा जीवादीया जीव-गुणा चेदणा य उवओगा।
सुर-णर-णारय-तिरिया जीवस्स य पज्जया बहुगा॥ 16 ॥

मणुअत्तणेण णट्ठो देही देवो व होदि इदरो वा।
उभयत्थ जीव-भावो ण णस्सदे ण जायदे अण्णो॥ 17 ॥

सो चेव जादि मरणं जादि ण णट्ठो ण चेव उप्पण्णो।
उप्पण्णो य विणट्ठो देवो मणुसो ति पज्जाओ॥ 18 ॥

एवं सदो विणासो असदो भावस्स णत्थि उप्पादो।
तावदियो जीवाणं देवो मणुसो ति गदिणामो॥ 19 ॥

णाणावरणादीया भावा जीवेण सुट्ठु अणुबद्धा।
तेसिमभावं किच्चा अभूदपुव्वो हवदि सिद्धो॥ 20 ॥

एवं भावमभावं भावाभावं अभाव-भावं च।
गुण-पज्जयेहिं सहिदो संसरमाणो कुणदि जीवो॥ 21 ॥

जीवा पोग्गलकाया आयासं अत्थिकाइया सेसा।
अमया अत्थित्तमया कारणभूदा दु लोगस्स॥ 22 ॥

सब्भाव-सहावाणं जीवाणं तह य पोग्गलाणं च।
परियट्ठण-संभूदो कालो णियमेण पण्णत्तो॥ 23 ॥

ववगद-पण-वण्ण-रसो ववगद-दो-गंध-अट्ठ-फासो य।
अगुरुलहुगो अमुत्तो वट्ठण-लक्खो य कालो ति॥ 24 ॥

समओ णिमिसो कट्ठा कला व णाली तदो दिवा-रत्ती।
मासोडु-अयणं संवच्छरो ति कालो परायत्तो॥ 25 ॥

णत्थि चिरं वा खिप्पं मत्तारहियं तु सा वि खलु मत्ता।

पोग्गलदव्वेण विणा तम्हा कालो पडुच्च भवो॥ 26 ॥

जीवो ति हवदि चेदा उवओग-विसेसिदो पहु कत्ता।
भोत्ता सदेह-मेत्तो ण हि मुत्तो कम्म-संजुत्तो॥ 27 ॥

कम्म-मल-विप्पमुक्को उड्ढं लोगस्स अंतमधिगंता।
सो सव्व-णाण-दरिसी लहइ सुहमणिंदियमणंतं॥ 28 ॥

जादो सयं स चेदा सव्वण्हू सव्व-लोय-दरिसी य।
पावदि इंदिय-रहिदं अच्चाबाहं सगममुत्तं॥ 29 ॥

पाणेहिं चदुहिं जीवदि जीविस्सदि जो हु जीविदो पुव्वं।
सो जीवो पाणा पुण बलमिंदियमाउ उस्सासो॥ 30 ॥

अगुरुलहुगाणंता तेहिं अणंतेहिं परिणदा सव्वे।
देसेहिं असंखादा सिय लोगं सव्वमावण्णा॥ 31 ॥

केचिच्च अणावण्णा मिच्छादंसण-कसाय-जोग-जुदा।
विजुदा य तेहिं बहुगा सिद्धा संसारिणो जीवा॥ 32 ॥

जह पउमराय-रयणं खित्तं खीरे पहासयदि खीरं।
तह देही देहत्थो सदेह-मेत्तं पहासयदि॥ 33 ॥

सव्वत्थ अत्थि जीवो ण य एक्को एक्कगो य एक्कट्ठो।
अज्झवसाण-विसिट्ठो चेत्ठदि मलिणो रज-मत्तेहिं॥ 34 ॥

जेसिं जीव-सहाओ णत्थि अभावो य सव्वहा तत्थ।
ते होंति भिण्ण-देहा सिद्धा वचिगोयरमतीदा॥ 35 ॥

ण कदाचि वि उप्पण्णो जम्हा कज्जं ण तेण सो सिद्धो।
उप्पादेदि ण किंचि वि कारणमिह तेण ण सो होहि॥ 36 ॥

सस्सदमधमुच्छेदं भव्वमभव्वं च सुण्णमिदरं च।
विण्णाणमविण्णाणं ण वि जुज्जदि असदि सब्भावे॥ 37 ॥

कम्माणं फलमेक्को एक्को कज्जं तु णाणमथमेक्को।
वेदयदि जीव-रासी चेदग-भावेण तिविहेण॥ 38 ॥

सव्वे खलु कम्मफलं थावरकाया तसा हि कज्ज-जुदं।
पाणित्तमदिक्कंता णाणं विंदंति ते जीवा॥ 39 ॥

उवओगो खलु दुविहो णाणेण य दंसणेण संजुतो।
जीवस्स सव्वकालं अणण्णभूदं वियाणाहि॥ 40 ॥

आभिणि-सुदोधि-मण-केवलाणि णाणाणि पंच-भेयाणि।
कुमदि-सुद-विभंगाणि य तिण्णि वि णाणेहिं संजुते॥ 41 ॥

दंसणमवि चक्खु-जुदं अचक्खु-जुदमवि य ओहिणा सहियं।
अणिधणमणंत-विसयं केवलियं चावि पण्णत्तं॥ 42 ॥

ण वियप्पदि णाणादो णाणी णाणाणि होंति णेगाणि।
तम्हा दु विस्सरूवं भणियं दवियत्ति णाणीहिं॥ 43 ॥

मदिणाणं पुण तिविहं उबलद्धी भावणं च उवओगो।
तह एव चदुवियप्पं दंसण-पुव्वं हवदि णाणं॥ 43*1 ॥

सुदणाणं पुण णाणी भणंति लद्धी य भावणा चेव।
उवओग-णय-वियप्पं णाणेण य वत्थु अत्थस्स॥ 43*2 ॥

ओहिं तहेव घेप्पदु देसं परमं च ओहि सव्वं च।
तिण्णि वि गुणेण णियमा भवेण देसं तहा णियदं॥ 43*3 ॥

विउलमदी पुण णाणं अज्जव-णाणं च दुविह मणणाणं।
एदे संजम-लद्धी उवआगे अप्पमत्तस्स॥ 43*4 ॥

णाणं णेय-णिमित्तं केवलणाणं ण होदि सुदणाणं।
णेयं केवलणाणं णाणाणाणं च णत्थि केवलिणो॥ 43*5 ॥

मिच्छता अण्णाणं अविरदि-भावो य भाव-आवरणा।
णेयं पडुच्च काले तह दुण्णय दुप्पमाणं च॥ 43*6 ॥

जदि हवदि दव्वमण्णं गुणदो हि गुणा य दव्वदो अण्णे।
दव्वाणंतियमहवा दव्वाभावं पकुव्वति॥ 44 ॥

अविभत्तमण्णत्तं दव्व-गुणाणं विभत्तमण्णत्तं।
णेच्छंति णिच्चयण्हू तव्विवरीदं हि वा तेसिं॥ 45 ॥

ववदेसा संठाणा संखा विसया य होंति ते बहुगा।
ते तेसिमण्णत्ते अण्णत्ते चावि विज्जंते॥ 46 ॥

णाणं धणं च कुव्वदि धणिणं जह णाणिणं च दुविहेहिं।
भण्णंति तह पुधत्तं एयत्तं चावि तच्चण्हू॥ 47 ॥

णाणी णाणं च तहा अत्थंतरिदो दु अण्णमण्णस्स।
दोण्हं अचेदणत्तं पसयदि सम्मं जिणावमदं॥ 48 ॥

ण हि सो समवायादो अत्थंतरिदो दु णाणादो णाणी।
अण्णाणि ति य वयणं एयत्त-पसाहगं होदि॥ 49 ॥

समवती समवाओ अपुधब्भूदो य अजुदसिद्धा य।
तम्हा दव्व-गुणाणं अजुदा सिद्धि ति णिद्दिट्ठा॥ 50 ॥

वण्ण-रस-गंध-पासा परमाणु-परुविदा विसेसेहिं।
दव्वादो य अण्णणा अण्णत्त-पयासगा होंति॥ 51 ॥

दंसण-णाणाणि तहा जीव-णिबद्धाणि अण्णभूदाणि।
ववदेसदो पुधत्तं कुव्वंति हु णो सहावादो॥ 52 ॥

जीवा अणाइ-णिहणा संता अणंता य जीव-भावादो।
सब्भावदो अणंता पंचग्ग-गुणप्पहाणा य॥ 53 ॥

एवं सदो विणासो असदो जीवस्स हवदि उप्पादो।
इदि जिणवरेहि भणियं अण्णोण्ण-विरुद्धमविरुद्धं॥ 54 ॥

णेरइय-तिरिय-मणुआ देवा इदि णाम-संजुदा पयडी।
कुव्वंति सदो णासं असदो भावस्स उप्पत्ती॥ 55 ॥

उदयेण उवसमेण य खयेण दुहि मिस्सिदेण परिणामे।
जुत्ता ते जीव-गुणा बहु-सुद-सत्थेसु वित्थिण्णा॥ 56 ॥

कम्मं वेदयमाणो जीवो भावं करेदि जारिसयं।
सो तस्स तेण कत्ता हवदि ति य सासणे पढिदं॥ 57 ॥

कम्मेण विणा उदयं जीवस्स ण विज्जदे उवसमं वा।
खइयं खओवसमियं तम्हा भावं तु कम्मकदं॥ 58 ॥

भावो जदि कम्मकदो आदा कम्मस्स होदि किह कत्ता।
ण कुणदि अत्ता किंचि वि मुत्ता अण्णं सगं भावं॥ 59 ॥

भावो कम्म-णिमित्तं कम्मं पुण भाव-कारणं हवदि।

ण दु तेसिं खलु कत्ता ण विणा भूदा दु कत्तारं॥ 60 ॥

कुव्वं सगं सहावं अत्ता कत्ता सगस्स भावस्स।
ण हि पोग्गल-कम्माणं इदि जिणवयणं मुणेदव्वं॥ 61 ॥

कम्मं पि सगं कुव्वदि सगेण भावेण सम्ममप्पाणं।
जीवो वि य तारिं सओ कम्म-सहावेण भावेण॥ 62 ॥

कम्मं कम्मं कुव्वदि जदि सो अप्पा करेदि अप्पाणं।
किह तस्स फलं भुंजदि अप्पा कम्मं च देदि फलं॥ 63 ॥

ओगाढ-गाढ-णिचिदो पोग्गलकायेहि सव्वदो लोगो।
सुहुमेहि बादरेहि य अणंताणंतेहिं विविहेहि॥ 64 ॥

अत्ता कुणदि सहावं तत्थ गदा पोग्गला सहावेहिं।
गच्छंति कम्मभावं अण्णोण्णागाहमवगाढा॥ 65 ॥

जह पोग्गल-दव्वाणं बहुप्पयारेहिं खंद-णिप्पत्ती।
अकदा परेहिं दिट्ठा तह कम्माणं वियाणाहि॥ 66 ॥

जीवा पोग्गलकाया अण्णोण्णागाढ-गहण-पडिबद्धा।
काले विजुज्जमाणा सुह-दुक्खं दिंति भुंजंति॥ 67 ॥

तम्हा कम्मं कत्ता भावेण हि संजुदाध जीवस्स।
भोत्ता दु हवदि जीवो चेदग-भावेण कम्म-फलं॥ 68 ॥

एवं कत्ता भोत्ता होज्जं अप्पा सगेहि कम्मेहिं।
हिंडदि पारमपारं संसारं मोह-संछण्णो॥ 69 ॥

उवसंत-खीण-मोहो मग्गं जिण-भासिदेण समुवगदो।
णाणमणुमग्गचारी णिव्वाण-पुरं वजदि धीरो॥ 70 ॥

एक्को चेव महप्पा सो दुवियप्पो तिलक्खणो हवदि।
चदु-संकमो य भणिदो पंचग्ग-गुणप्पहाणो य॥ 71 ॥

छक्कावक्कमजुत्तो उवजुत्तो सत्त-भंग-सब्भावो।
अट्ठासवो णवट्ठो जीवो दह ठाणियो भणियो॥ 72 ॥

पयडिट्ठिदि-अणुभाग-पदेस-बंधेहिं सव्वदो मुक्को।
उड्ढं गच्छदि सेसा विदिसा-वज्जं गदिं जंति॥ 73 ॥

खंदा य खंददेसा खंदपदेसा य होंति परमाणू।
इदि ते चदुव्वियप्पा पोग्गलकाया मुणेदव्वा॥ 74 ॥

खंदं सयल-समत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसो ति।
अद्धद्धं च पदेसो परमाणू चेव अविभागी॥ 75 ॥

बादर-सुहुम-गदाणं खंदाणं पोग्गलो ति ववहारो।
ते होंति छप्पयारा णिप्पणं जेहि तेलोक्कं॥ 76 ॥

पुढवी जलं च छाया चउरिंदिय-विसय-कम्म-पाओग्गा।
कम्मातीदा येवं छब्भेया पोग्गला होंति॥ 76*1 ॥

सव्वेसिं खंदाणं जो अंतो तं वियाण परमाणू।
सो सस्सदो असद्दो एक्को अविभागी मुत्तिभवो॥ 77 ॥

आदेस-मत-मुत्तो धाउ-चउक्कस्स कारणं जो दु।
सो णेओ परमाणू परिणाम-गुणो सयमसद्दो॥ 78 ॥

सद्दो खंदप्पभवो खंदो परमाणु-संग-संघादो।
पुट्ठेसु तेसु जायदि सद्दो उप्पादिगो णियदो॥ 79 ॥

णिच्चो णाणवगासो ण सावगासो पदेसदो भेत्ता।
खंदाणं कत्ता वि य पविभत्ता कालसंखाणं॥ 80 ॥

एय-रस-वण्ण-गंधं दो-पासं सद्द-कारणमसद्दं।
खंदंतरिदं दव्वं परमाणुं तं वियाणाहि॥ 81 ॥

उवभोज्जमिंदियेहिं य इंदियकाया मणो य कम्माणि।
जं हवदि मुत्तिमण्णं तं सव्वं पोग्गलं जाणे॥ 82 ॥

धम्मत्थिकायमरसं अवण्ण-गंधं असद्दमप्फासं।
लोगागाढं पुट्ठं पिहुलमसंखादिय-पदेसं॥ 83 ॥

अगुरुग-लहुगेहि सदा तेहि अणंतेहि परिणदं णिच्चं।
गदि-किरिया-जुत्ताणं कारण-भूदं सयमकज्जं॥ 84 ॥

उदयं जह मच्छाणं गमणाणुग्गहयरं हवदि लोए।
तह जीव-पुग्गलाणं धम्मं दव्वं वियाणेहि॥ 85 ॥

जह हवदि धम्मदव्वं तह तं जाणेह दव्वमधम्मकखं।
ठिदि-किरिया-जुत्ताणं कारण-भूदं तु पुढवीव॥ 86 ॥

जादो अलोग-लोगो जेसिं सब्भावदो य गमण-ठिदी।
दो वि य मया विभत्ता अविभत्ता लोयमेत्ता य॥ 87 ॥

ण य गच्छदि धम्मत्थी गमणं ण करेदि अण्ण-दवियस्स।
हवदि गदिस्स य पसरो जीवाणं पोग्गलाणं च॥ 88 ॥

विज्जदि जेसिं गमणं ठाणं पुण तेसिमेव संभवदि।
ते सग-परिणामेहिं दु गमणं ठाणं च कुव्वंति॥ 89 ॥

सव्वेसिं जीवाणं सेसाणं तह य पोग्गलाणं च।
जं देदि विवरमखिलं तं लोगे हवदि आगासं॥ 90 ॥

जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्मा य लोगदोणणा।
ततो अण्णमण्णं आगासं अंतवदिरितं॥ 91 ॥

आयासं अवगासं गमणट्ठिदि-कारणेहिं देदि जदि।
उड्ढं-गदिप्पधाणा सिद्धा चेत्ठंति किह तत्थ॥ 92 ॥

जम्हा उवरिट्ठाणं सिद्धाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं।
तम्हा गमणट्ठाणं आयासे जाण णत्थि ति॥ 93 ॥

जदि हवदि गमण-हेदू आयासं ठाण-कारणं तेसिं।
पसयदि अलोग-हाणी लोगस्स य अंत-परिवड्ढी॥ 94 ॥

तम्हा धम्माधम्मा गमणट्ठिदि-कारणाणि णागासं।
इदि जिणवरेहिं भणिदं लोग-सहावं सुणंताणं॥ 95 ॥

धम्माधम्मागासा अपुधभूदा समाण-परिमाणा।
पुधगुवलद्ध-विसेसा करेन्ति एयत्तमण्णत्तं॥ 96 ॥

आगास-काल-जीवा धम्माधम्मा य मुत्ति-परिहीणा।
मुत्तं पुग्गल-दव्वं जीवो खलु चेदणो तेसु॥ 97 ॥

जीवा पोग्गलकाया सह सक्किरिया हवंति ण य सेसा।
पोग्गलकरणा जीवा खंदा खलु कालकरणेहिं॥ 98 ॥

जे खलु इंदियगेज्झा विसया जीवेहिं होंति ते मुत्ता।

सेसं हवदि अमुत्तं चित्तं उभयं समादियदि॥ 99 ॥

कालो परिणाम-भवो परिणामो दव्वकाल-संभूदो।
दोण्हं एस सहाओ कालो खण-भंगुरो णियदो॥ 100 ॥

कालो त्ति य ववदेसो सब्भाव-परूवगो हवदि णिच्चो।
उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहंतरट्ठाई॥ 101 ॥

एदे कालागासा धम्माधम्मा य पोग्गला जीवा।
लब्भंति दव्व-सण्णं कालस्स य णत्थि कायत्तं॥ 102 ॥

एवं पवयणसारं पंचत्थिय-संगहं वियाणिता।
जो मुयदि राय-दोसे सो गाहदि दुक्ख-परिमोक्खं॥ 103 ॥

मुणिदूण एदमत्थं तमणुगमणुज्झदो णिहद-मोहो।
पसमिइद-राग-दोसो हवदि हदपरावरो जीवो॥ 104 ॥

अभिवंदिरुण सिरसा अपुणब्भव-कारणं महावीरं।
तेसिं पयत्थ-भंगं मग्गं मोक्खस्स वोच्छामि॥ 105 ॥

सम्मत्त-णाण-जुत्तं चारित्तं राग-दोस-परिहीणं।
मोक्खस्स हवदि मग्गो भव्वाणं लद्ध-बुद्धीणं॥ 106 ॥

एवं जिण-पण्णत्ते सदद्दहमाणस्स भावदो भावे।
पुरिसस्साभिणिबोधे दंसण-सद्दो हवदि जुत्तो॥ 106*1 ॥

सम्मत्तं सदद्दहणं भावाणं तेसिमधिगमो णाणं।
चारित्तं समभावो विसयेसु विरूढ-मग्गाणं॥ 107 ॥

जीवाजीवा भावा पुण्णं पावं च आसवं तेसिं।
संवर-णिज्जर-बंधो मोक्खो य हवंति ते अट्ठा॥ 108 ॥

जीवा संसारत्था णिब्बाधा चेदणप्पगा दुविहा।
उवओग-लक्खणा वि य देहादेहप्पवीचारा॥ 109 ॥

पुढ्वी य उदगमगणी वाउ-वणप्फदि-जीव-संसिदा काया।
दैति खलु मोह-बहुलं फासं बहुगा वि ते तेसिं॥ 110 ॥

ति त्थावर-तणु-जोगा अणिलाणल-काइया य तेसु तसा।
मण-परिणाम-विरहिदा जीवा एइंदिया णेया॥ 111 ॥

एदे जीव-णिकाया पंचविहा पुढविकाइयादीया।
मण-परिणाम-विरहिदा जीवा एगेंदिया भणिया॥ 112 ॥

अंडेसु पवड्ढंता गब्भत्था माणुसा य मुच्छगया।
जारिसया तारिसया जीवा एगेंदिया णेया॥ 113 ॥

संबुक्क-मादुवाहा संखा सिप्पी अपादगा य किमी।
जाणंति रसं फासं जे ते बे इंदिया जीवा॥ 114 ॥

जूगा-गुंभी-मक्कुण-पिपीलिया विच्छियादिया कीडा।
जाणंति रसं फासं गंधं तेइंदिया जीवा॥ 115 ॥

उदुंसमसय-मक्खिय-मधुकर-भमरा पतंगमादिया।
रूवं रसं च गंधं फासं पुण ते वि जाणंति॥ 116 ॥

सुर-णर-णारय-तिरिया वण्ण-रसप्फास-गंध-सदुण्हू।
जलचर-थलचर-खचरा बलिया पंचेंदिया जीवा॥ 117 ॥

देवा चउण्णिकाया मणुया पुण कम्म-भोगभूमीया।
तिरिया बहुप्पयारा णेरइया पुढवि-भेय-गदा॥ 118 ॥

खीणे पुव्वणिबद्धे गदिणामे आउसे च ते वि खलु।
पापुण्णति य अण्णं गदिमाउस्सं सलेस्सवसा॥ 119 ॥

एदे जीव-णिकाया देहप्पविचारमस्सिदा भणिदा।
देह-विहूणा सिद्धा भव्वा संसारिणो अभव्वा य॥ 120 ॥

ण हि इंदियाणि जीवा काया पुण छप्पयार पण्णत्ता।
जं हवदि तेसु णाणं जीवो ति य तं परूपवंति॥ 121 ॥

जाणदि पस्सदि सव्वं इच्छदि सुक्खं बिभेदि दक्खादो।
कुव्वदि हिदमहिदं वा भुंजदि जीवो फलं तेसिं॥ 122 ॥

एवमभिगम्म जीवं अण्णेहिं वि पज्जएहिं बहुगेहिं।
अभिगच्छदु अज्जीवं णाणंतरिदेहिं लिंगेहिं॥ 123 ॥

आगास-काल-पुग्गल-धम्माधम्मेसु णत्थि जीवगुणा।
तेसिं अचेदणत्तं भणिदं जीवस्स चेदणदा॥ 124 ॥

सुह-दुक्ख-जाणणा वा हिद-परियम्मं च अहिद-भीरुत्तं।
जस्स ण विज्जदि णिच्चं तं समणा विंति अज्जीवं॥ 125 ॥

संठाणा संघादा वण्ण-रसप्फास-गंध-सद्दा य।
पोग्गल-दव्वप्पभवा होंति गुणा पज्जया य बहू॥ 126 ॥

अरसमरूवमगंधमव्वत्तं चेदणा-गुणमसददं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्विट्ठ-संठाणं॥ 127 ॥

जो खलु संसारत्थो जीवो ततो दु होदि परिणामो।
परिणामादो कम्मं कम्मादो होदि गदिसु गदि॥ 128 ॥

गदिमधिगदस्स देहो देहादो इंदियाणि जायन्ते।
तेहिं दु विसयग्गहणं ततो रागो व दोसो वा॥ 129 ॥

जायदि जीवस्सेवं भावो संसार-चक्कवालम्मि।
इदि जिणवरेहिं भणिदो अणादि-णिधणो सणिधणो वा॥ 130 ॥

मोहो रागो दोसो चित्त-पसादो य जस्स भावम्मि।
विज्जदि तस्स सुहो वा असुहो वा होदि परिणामो॥ 131 ॥

सुह-परिणामो पुण्णं असुहो पावति होदि जीवस्स।
दोण्हं पोग्गल-मेत्तो भावो कम्मत्तणं पत्तो॥ 132 ॥

जम्हा कम्मस्स फलं विसयं फासेहिं भुंजदे णियदं।
जीवेण सुह-दुक्खं तम्हा मुत्ताणि कम्माणि॥ 133 ॥

मुत्तो फासदि मुत्तं मुत्तो मुत्तेण बंधमणुहवदि।
जीवो मुत्ति-विरहिदो गाहदि ते तेहि उग्गहदि॥ 134 ॥

रागो जस्स पसत्थो अणुकंपा-संसिदो य परिणामो।
चित्तम्हि णत्थि कलुसो पुण्णं जीवस्स आसवदि॥ 135 ॥

अरहंत-सिद्ध-साहुसु भत्ती धम्मम्हि जा च खलु चेट्ठा।
अणुगमणं पि गुरूणं पसत्थ-रागो ति उच्चंति॥ 136 ॥

तिसिदं बुभुक्खिदं वा दुहिदं दट्ठूण जो हि दुहिद-मणो।
पडिवज्जदि तं किवया तस्सेसा होदि अणुकंपा॥ 137 ॥

कोधो व जदा माणो माया लोहो व चित्तमासेज्ज।

जीवस्स कुणदि खोहं कलुसो ति य तं बुधा वेति॥ 138 ॥

चरिया पमाद-बहुला कालुस्सं लोलदा य विसयेसु।
पर-परिदावापवादो पावस्स य आसवं कुणदि॥ 139 ॥

सण्णाओ य ति-लेस्सा इंदिय-वसदा य अट्ट-रुद्दाणि।
णाणं च दुप्पउत्तं मोहो पावप्पदो होदि॥ 140 ॥

इंदिय-कसाय-सण्णा णिग्गहिदा जेहि सुट्ठु मग्गम्हि।
जावत्तावत्तेसिं पिहिदं पापासवच्छिददं॥ 141 ॥

जस्स ण विज्जदि रागो दोसो मोहो व सव्व-दव्वेसु।
णासवदि सुहं असुहं सम-सुह-दुक्खस्स भिक्खुस्स॥ 142 ॥

जस्स जदा खलु पुण्णं जोगे पावं च णत्थि विरदस्स।
संवरणं तस्स तदा सुहासुह-कदस्स कम्मस्स॥ 143 ॥

संवर-जोगेहिं जुदो तवेहिं जो चेत्ठदे बहुविहेहिं।
कम्माणं णिज्जरणं बहुगाणं कुणदि सो णियदं॥ 144 ॥

जो संवरेण जूतो अप्पट्ठ-पसाहगो हि अप्पाणं।
मुणिदूण झादि णियदं णाणं सो संधुणोदि कम्म-रयं॥ 145 ॥

जस्स ण विज्जदि रागो दोसो मोहो व जोग-परिणामो।
तस्स सुहासुह-दहणो झाणमओ जायदे अगणी॥ 146 ॥

जं सुहमसुहमुदिण्णं भावं रतो करेदि जदि अप्पा।
सो तेण हवदि बंधो पोग्गल-कम्मेण विविहेण॥ 147 ॥

जोग-णिमित्तं गहणं जोगो मण-वयण-काय-संभूदो।
भाव-णिमित्तो बंधो भावो रदि-राग-दोस-मोह-जुदो॥ 148 ॥

हेदू हि चदुवियप्पो अट्ठवियप्पस्स कारणं भणियं।
तेसिं पि य रागादी तेसिमभावे ण बज्झंते॥ 149 ॥

हेदु अभावे णियमा जायदि णाणिस्स आसव-णिरोधो।
आसव-भावेण विणा जायदि कम्मस्स दु णिरोधो॥ 150 ॥

कम्मस्साभावेण य सव्वण्हू सव्व-लोय-दरिसी य।
पावदि इंदिय-रहिदं अच्चाबाहं सुहमणंतं॥ 151 ॥

दंसण-णाण-समग्गं झाणं णो अण्ण-दव्व-संजुतं।
जायदि णिज्जर-हेदू सहाव-सहिदस्स साहुस्स॥ 152 ॥

जो संवरेण जुतो णिज्जरमाणो य सव्व-कम्माणि।
ववगद-वेदाउस्सो मुअदि भवं तेण सो मोक्खो॥ 153 ॥

जीव-सहाओ णाणं अप्पडिहद-दंसणं अणण्णमयं।
चरियं च तेसु णियदं अत्थित्तमणिंदियं भणियं॥ 154 ॥

जीवो सहाव-णियदो अणियद-गुण-पज्जओ य परसमओ।
जदि कुणदि सगं समयं पब्भस्सदि कम्म-बंधादो॥ 155 ॥

जो पर-दव्वम्हि सुहं असुहं रायेण कुणदि जदि भावं।
सो सग-चरित्त-भट्ठो पर-चरिय-चरो हवदि जीवो॥ 156 ॥

आसवदि जेण पुण्णं पावं वा अप्पणोथ भावेण।
सो तेण पर-चरित्तो हवदि ति जिणा परूवेंति॥ 157 ॥

जो सव्व-संग-मुक्को णण्णमणो अप्पणं सहावेण।
जाणदि पस्सदि णियदं सो सग-चरियं चरदि जीवो॥ 158 ॥

चरियं चरदि सगं सो जो पर-दव्वप्प-भाव-रहिदप्पा।
दंसण-णाण-वियप्पं अवियप्पं चरदि अप्पादो॥ 159 ॥

धम्मादी-सद्दहणं सम्मतं णाणमंगपुव्वगदं।
चिट्ठा तवम्हि चरिया ववहारो मोक्खमग्गो ति॥ 160 ॥

णिच्छयणयेण भणिदो तिहि तेहि समाहिदो य जो अप्पा।
ण कुणदि किंचिवि अण्णं ण मुयदि सो मोक्खमग्गो ति॥ 161 ॥

जो चरदि णादि पेच्छदि अप्पाणं अप्पणा अणण्णमयं।
सो चारित्तं णाणं दंसणमिदि णिच्छिदो हवदि॥ 162 ॥

जेण विजाणदि सव्वं पेच्छदि सो तेण सोक्खमणुभवदि।
इदि तं जाणदि भवियो अभविय संतो ण सद्दहदि॥ 163 ॥

दंसण-णाण-चरित्ताणि मोक्खमग्गो ति सेविदव्वाणि।
साधूहिय इदि भणिदं तेहि दु बंधो व मोक्खो वा॥ 164 ॥

अण्णाणादो णाणी जदि मण्णदि सुद्ध-संपयोगादो।
हवदि ति दुक्ख-मोक्खो पर-समय-रदो हवदि जीवो॥ 165 ॥

अरहंत-सिद्ध-चेदिय-पवयण-गण-णाण-भत्ति-संपण्णो।
बंधदि पुण्णं बहुसो ण हु सो कम्मक्खयं कुणदि॥ 166 ॥

जस्स ह्दिदयेणुमेतं वा परदव्वं हि विज्जदे रागो।
सो ण विजाणादि समयं सगस्स सव्वागमधरो वि॥ 167 ॥

धरिदुं जस्स ण सक्को चित्तंभामो विणा दु अप्पाणं।
रोधो तस्स ण विज्जदि सुहासुह-कदस्स कम्मस्स॥ 168 ॥

तम्हा णिव्वुदि-कामो णिस्संगो णिम्ममो य भविय पुणो।
सिद्धेसु कुणदु भत्तिं णिव्वाणं तेण पप्पोदि॥ 169 ॥

सपदत्थं तित्थयरं अभिगद-बुद्धिस्स सुत्त-रोचिस्स।
दूरयरं णिव्वाणं संजम-तव-सपजुत्तस्स॥ 170 ॥

अरिहंत-सिद्ध-चेदिय-पवयण-भत्तो परेण णियमेण।
जो कुणदि तवोकम्मं सो सुर-लोगं समादियदि॥ 171 ॥

तम्हा णिव्वुदि-कामो रागं सव्वत्थ कुणदु मा किंचि।
सो तेण वीयरगो भवियो भव-सायरं तरदि॥ 172 ॥

मग्गप्पभावणट्ठं पवयण-भत्तिप्पचोदिदेण मया।
भणियं पवयणसारं पंचत्थिय-संगहं सुत्तं॥ 173 ॥